सौम्या सुरेश

अन्तोन चेख़व

टीकरा

43

अन्तोन चेख़व

टीकरा

चित्रकार: न० चरूशिन

भूखी मादा भेड़िया शिकार पर जाने के लिए उठी। उसके तीनों पिल्ले एक दूसरे से सटे गहरी नींद में सो रहे थे। मां ने उन्हें चाटा और चल दी। मार्च का वसंती महीना था, पर अभी भी दिसम्बर की भांति रात में ठंड से पेड़ चटखते थे, और जीभ बाहर निकालते ही उस पर सुइयां सी चुभने लगती थीं। मादा भेड़िया कमज़ोर पड़ चुकी थी और अब उसे बात-बात पर डर लगने लगा था। ज़रा सी आहट होने पर वह चौंक उठती। वह यही सोचती जा रही थी कि उसके पीछे कहीं कोई उसके बच्चों को न छेड़े। लोगों के और घोड़ों के पांवों के निशानों की गंध, खुत्थियां, सूखी लकड़ियों के ढेर और लीद से पटा काला रास्ता – यह सब उसे भयभीत करता था। उसे लगता था कि पेड़ों के पीछे झुटपुटे में लोग छिपे खड़े हैं, और जंगल के पार कहीं कुत्ते भौंक रहे हैं।

वह बूढ़ी हो चली थी और उसकी इंद्रियां क्षीण पड़ गई थीं। कभी-कभी वह लोमड़ी के पंजों के निशानों को कुत्ते के निशान समझ बैठती, यहां तक कि इस तरह भ्रम में पड़कर रास्ते से भी भटक जाती। जब वह जवान थी, तब कभी भी उसके साथ ऐसा नहीं होता था। कमज़ोर होने के कारण वह अब पहले की भांति बछड़ों और बड़े मेढ़ों का शिकार नहीं करती थी, घोड़ों और बछेड़ों के तो वह पास ही नहीं फटकती थी। लोथ से ही वह पेट भरती थी, ताज़ा मांस उसे विरले ही कभी खाने को मिलता था, सो भी वसंत में ही जब अचानक कोई मादा खरगोश दिख जाने पर वह उसके बच्चे छीन लेती या किसानों के यहां भेड़ों की कोठरी में घुस जाती, जहां उन दिनों मेमने होते।

उसके भट से कोई दो मील दूर सड़क के किनारे एक घर था। यहां सत्तर बरस का बूढ़ा चौकीदार इग्नात रहता था। वह हर वक्त खांसता और अपने आप से बातें करता रहता था। आम तौर पर वह रात में सोता था और दिन में बंदूक उठाए जंगल में घूमता रहता था, खरगोश को देखते ही सीटी बजाता था। वह ज़रूर पहले इंजन पर काम करता रहा होगा क्योंकि हर बार रुकने से पहले चिल्लाता था: "इंजन रोक!" – और आगे चलने से पहले हुक्म देता: "इंजन चला!" उसके पास अनजान नस्ल की बहुत बड़ी काली कुतिया थी, जिसका नाम था अराप्का। जब वह बहुत आगे दौड़ जाती, तो चौकीदार उसे हुक्म देता: "इंजन पीछे ले!" कभी-कभी वह गाता और उसके साथ ही ज़ोरों से डगमगाता, रह-रहकर वह गिर पड़ता (मादा भेड़िया सोचती थी कि इसका कारण हवा है) और चिल्लाता: "पटरी से उतर गया!"

मादा भेड़िये को याद था कि पिछली गर्मियों और पतझड़ में उस घर के पास एक मेढ़ा और दो भेड़ें चरा करती थीं, और थोड़े दिन पहले जब वह उधर से गुज़र रही थी, तो उसे लगा था कि कोठरी में कोई मिमिया रहा है। अब उस घर के पास पहुंचते हुए वह सोच रही थी कि मार्च का महीना चढ़ चुका है, और अब कोठरी में ज़रूर मेमने होने चाहिए। वह भूख से व्याकुल थी और सोच रही थी कि कैसे हौके से वह मेमने को खाएगी। इन विचारों से उसके दांत किटकिटा रहे थे और आंखें अंधेरे में दो अंगारों सी चमक रही थीं।

इग्नात के झोंपड़े, कोठरी और कुएं के चारों ओर हिम के ऊंचे-ऊंचे ढेर लग गए थे। सन्नाटा छाया हुआ था। अराप्का शायद कोठरी के बाहर पौड़ियों तले सो रही थी।

हिम के ढेर पर से मादा भेड़िया कोठरी के छप्पर पर चढ़ गई और पंजों व थूथने से फूस खुरचने लगी। फूस फूला-फूला और सड़ा हुआ था; वह उसमें से गिरते-गिरते बची। सहसा गरम भाप का झोंका सा उसके थूथने पर पड़ा और उसके नथुनों में मींगनों और भेड़ के दूध की गंध भर गई। ठंड लगने पर नीचे मेमना हौले से मिमियाया। मादा भेड़िया छेद में कूद पड़ी, उसके अगले पंजे और छाती किसी नरम सी गरम चीज़ से टकराए, शायद वह मेढ़ा ही था। और उसी क्षण कोठरी में कोई पिपियाया, भौंका और हुआता हुआ किकियाने लगा, भेड़ें छिटककर दीवार से सट गईं, उधर मादा भेड़िया डर के मारे जो मुंह में आया उसे ही उठाकर बाहर कूद गई...

वह पूरा ज़ोर लगाकर भागती जा रही थी, इस बीच अराप्का को भेड़िये की गंध आ गई थी और वह बेतहाशा भौंक रही थी, गरम कोठरी में मुर्गियां कुड़-कुड़ कर रही थीं, और इग्नात झोंपड़े से बाहर निकलकर चिल्ला रहा था:

"इंजन चला! सीटी बजा!"

और वह इंजन की तरह सीटी बजाने लगा, फिर चिल्लाया: हो-हो-हो-हो!.. यह सारा शोर जंगल में गूंज रहा था।

धीरे-धीरे जब शोर ठंडा पड़ गया और मादा भेड़िया कुछ निश्चिंत हुई, तब उसका ध्यान इस बात की ओर गया कि अपने जिस शिकार को दांतों में दबोच कर वह हिम पर घसीटे ले जा रही है, वह कुछ ज़्यादा ही भारी और सख़्त है, इन दिनों में मेमने तो इतने भारी नहीं होते और न ही इतने सख़्त; गंध भी कुछ और ही तरह की थी, आवाज़ें भी अजीब सी आ रही थीं... मादा भेड़िया थम गई, उसने अपने शिकार को बर्फ़ पर रख दिया, ताकि ज़रा सांस ले ले और फिर उसे खाए, पर तभी वह घिन से परे हट गई। यह तो मेमना नहीं, पिल्ला था, काला पिल्ला, लंबी टांगों और बड़े से सिर वाला, अराप्का की ही तरह उसके सारे माथे पर सफ़ेद टीका था। चाल-ढाल से वह मामूली नस्ल का कुत्ता ही लगता था। उसने अपनी नुची हुई, घायल पीठ पर जीभ फेरी, और मानो कुछ हुआ ही न हो, दुम हिलाता हुआ भौंकने लगा। मादा भेड़िया

कुत्तों की तरह गुर्राई और पिल्ले से दूर भाग चली। वह भी उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। मादा भेड़िये ने मुड़कर देखा और दांत पीसे ; पिल्ला हैरान-परेशान सा थम गया, फिर शायद यह सोचकर कि मादा भेड़िया उसके साथ खेल रही है, उसने घर की ओर मुंह किया और खनखनाते, हर्षमय स्वर में भौंकने लगा, मानो अपनी मां अराप्का को अपने और मादा भेड़िये के साथ खेलने के लिए बुला रहा हो।

पौ फट रही थी। मादा भेड़िया जब एस्प वृक्षों के घने झुरमुट से गुज़र रही थी, तो एक-एक एस्प वृक्ष साफ़ दिखाई दे रहा था। जंगली मुर्गे जाग रहे थे, पिल्ले के यों असावधानी से कूदने और भौंकने से वे अपने सुंदर पंख फड़फड़ाते हुए उड़ रहे थे।

"यह मेरे पीछे क्यों भागा चला आ रहा है?" मादा भेड़िया झुंझलाते हुए सोच रही थी। "शायद यह चाहता है कि मैं इसे खा लूं।"

मादा भेड़िये का भट एक उथले गड्ढे में था। तीन साल पहले आंधी-तूफ़ान से चीड़ का एक पुराना पेड़ उखड़ गया था और उससे यह गड्ढा बन गया था। अब गड्ढे के तले पर सूखी पत्तियां और काई थी, वहीं पर हड्डियां और बैल के सींग भी थे, जिनसे मादा भेड़िये के बच्चे खेलते थे। वे जाग गए थे और तीनों के तीनों, हूबहू एक ही शक्ल के, अपने गड्ढे के सिरे पर खड़े थे और घर लौटती मां की ओर देखते हुए दुम हिला रहे थे। उन्हें देखकर पिल्ला थोड़ी दूर ही खड़ा हो गया और देर तक उन पर टकटकी लगाए खड़ा

रहा; फिर जब उसने देखा कि वे भी उस पर आंखें गड़ाए हुए हैं, तो गुस्से से भौंकने लगा, जैसे बेगानों को देखकर भौंकता था।

उजाला हो गया और सूरज निकल आया, चारों ओर हिम झिलमिलाने लगा, पर पिल्ला अभी भी दूर खड़ा भौंक रहा था। मादा भेड़िये के बच्चे मां का दूध पी रहे थे, उसके पिचके पेट में पंजे मार रहे थे, उधर वह घोड़े की सफ़ेद, सूखी हड्डी चबा रही थी। वह भूख से व्याकुल थी, कुत्ते के भौंकने से उसका सिर फटा जा रहा था और जी करता था कि बिन बुलाए मेहमान पर झपट पड़े और उसकी बोटी-बोटी नोच डाले।

आखिर पिल्ला थक गया, उसका गला बैठ गया; यह देखकर कि कोई उससे डर नहीं रहा, उसकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहा, वह हिम्मत करके भेड़िये के बच्चों की ओर बढ़ने लगा: कभी पंजों के बल बैठ जाता और कभी उछलकर आगे बढ़ता। अब दिन की रोशनी में उसे अच्छी तरह देखा जा सकता था... उसका सफ़ेद माथा खासा बड़ा था और उस पर गुमटे सा उभार था, जैसा बिल्कुल भोंदू कुत्तों के माथे पर होता है। आंखें छोटी सी, नीले धूमिल रंग की थीं, और सारे थूथने से बिल्कुल भोंदूपन का भाव छलकता था। भेड़िये के बच्चों के पास पहुंचकर उसने चौड़े पंजे आगे बढ़ाए, उन पर अपना थूथना रखा और मानो उन्हें बुलाते हुए भौंकने लगा।

भेड़िये के बच्चे कुछ नहीं समझे, पर दुम हिलाने लगे। तब पिल्ले ने एक के बड़े से सिर पर पंजा मारा। भेड़िये के बच्चे ने भी उसके सिर पर पंजा मारा। पिल्ला उसकी ओर बगल करके खड़ा हो गया और दुम हिलाते हुए तिरछी नज़र से देखने लगा, फिर अचानक दौड़ पड़ा। पपड़ी की तरह जमी बर्फ़ पर उसने दौड़ते-दौड़ते कुछ चक्कर लगाए। भेड़िये के बच्चे उसके पीछे दौड़े। उसने पीठ के बल लेटकर टांगें ऊपर उठा लीं, वे तीनों उस पर टूट पड़े और खुशी से किकियाते हुए उसे काटने लगे, पर ज़ोर से नहीं, बस यों ही मज़ाक में। चीड़ के ऊंचे पेड़ पर कौए बैठे थे और ऊपर से उनकी यह लड़ाई देखते हुए बेचैन हो रहे थे। जंगल में चहल-पहल हो गई। वसंती धूप गर्माहट देने लगी थी, और तूफ़ान से गिसे चीड़ के आर-पार उड़ते जंगली मुर्गे चमकती धूप में फ़िरोज़ी लग रहे थे।

मादा भेड़िया प्रायः बच्चों को शिकार से खेलने देती है और इस तरह उन्हें शिकार करना सिखाती है। अब बच्चों को पिल्ले के पीछे दौड़ते और उससे लड़ते देखकर मादा भेड़िया सोच रही थी:

"ठीक है, सीख लें।"

जी भर कर खेलने के बाद भेड़िये के बच्चे अपने भट में चले गए और सो गए। पिल्ला भूख के मारे थोड़ी देर हुआता रहा, फिर वह भी धूप में पसर गया। जागने पर वे फिर से खेलने लगे।

सारा दिन और सारी शाम मादा भेड़िया यह याद करती रही कि कैसे पिछली रात कोठरी में मेमना मिमिया रहा था और भेड़ के दूध की गंध आ रही थी, भूख के मारे उसके दांत किटकिटा रहे थे और वह हौके से पुरानी हड्डी ही चबाए जा रही थी, यह कल्पना करते हुए कि यह मेमना है। बच्चे उसका दूध पी रहे थे और भूखा पिल्ला उनके इर्द-गिर्द चक्कर काटते हुए हिम सूंघ रहा था।

"इसे खा ही डालती हूं," मादा भेड़िये ने जी पक्का किया।

वह पिल्ले के पास गई, और वह भेड़िये का थूथना चाटके किकियाया, यह सोचते हुए कि वह उसके साथ खेलना चाहती है। किसी ज़माने में मादा भेड़िये ने कुत्ते भी खाए थे, लेकिन पिल्ले से कुत्तों की बड़ी तेज़ बू आ रही थी, और सेहत कमज़ोर होने का कारण उससे अब यह बू सही नहीं जाती थी; उसे घिन आने लगी, और वह परे चली गई ...

रात घिरने लगी तो ठंड हो गई। पिल्ला उदास हो गया और अपने घर को चल दिया।

बच्चे जब गाढ़ी नींद सो गए, तो मादा भेड़िया फिर से शिकार को चल दी। पिछली रात की ही भांति ज़रा सी सरसराहट से ही वह आशंकित हो उठती, खुत्थियां, कुंदे

और यहां-वहां उगती इक्की-दुक्की अंधेरी झाड़ियां, जो दूर से लोगों जैसी लगती थीं – इस सब से वह भयभीत हो जाती। वह रास्ते से परे, बर्फ़ की पपड़ी पर दौड़ी जा रही थी। अचानक आगे रास्ते पर काला सा कुछ दिखा ... उसने अपनी आंखों और कानों पर ज़ोर डाला : सचमुच ही आगे कोई जा रहा था, कदमों की आहट भी सुनाई दे रही थी। बिज्जू तो नहीं? बड़ी सतर्कता से, सांस थामे, एक ओर को हट-हटकर बढ़ते हुए, वह काले धब्बे से आगे निकली, मुड़कर उसे देखते ही वह पहचान गई। यह माथे पर सफ़ेद टीके वाला पिल्ला था, जो धीरे-धीरे चलता हुआ अपने घर लौट रहा था।

"कहीं फिर से विघ्न न डाल दे," मादा भेड़िये ने सोचा और तेज़ी से आगे दौड़ चली।

पर अहाता पास ही था। एक बार फिर हिम के टीले से होते हुए वह कोठरी की छत पर चढ़ गई। कल का छेद नए फूस से बंद कर दिया गया था और छत पर दो नई लकड़ियां डाल दी गयी थीं। मादा भेड़िया जल्दी-जल्दी पंजे और थूथना चलाने लगी, बीच-बीच में वह मुड़कर देखती कि पिल्ला तो नहीं आ रहा, पर उसके नथुनों में गरम भाप और मींगनों की गंध पड़ी ही थी कि पीछे से कोई हर्षमय स्वर में भौंकने लगा। पिल्ला लौट आया था। वह उछलकर छत पर मादा भेड़िये के पास पहुंच गया, फिर छेद में कूद पड़ा और यह समझते ही कि वह घर पर, गरम जगह पर पहुंच गया है, कि ये अपनी ही भेड़ें हैं, और भी ज़ोर से भौंकने लगा ... अराप्का जाग गई, उसे भेड़िये की गंध आ गई और [illegible] आने लगी, मुर्गियां कुड़-कुड़ करने लगीं, और जब अपनी बंदूक लिए [illegible] मादा भेड़िया अहाते से काफ़ी दूर निकल गई थी।

[illegible]! लोह! दौड़ा दे इंजन!"

[illegible] फिर से घोड़ा दबाया, फिर बंदूक नहीं [illegible] आग का विशाल गोला निकला और [illegible] से झटका लगा; और फिर एक [illegible] ह देखने चल दिया कि हंगामा क्यों [illegible]

क्या [illegible] छा, जो उसके यहां रात काटने को रुका था और [illegible]

"कुछ नहीं," इग्नात ने जवाब दिया। "यों ही बेकार का शोर है। यह ससुरा टीकरा भेड़ों के साथ गरम जगह सोने जाता है। पर इत्ती अकल नहीं कि दरवजे से आए-जाए, छत को ही रास्ता समझे बैठा है। कल रात छत में छेद करके घूमने चला गया, अब लौटा है तो फिर से छत में छेद करके।"

"भोंदू है!"

"हां, पुरजा ढीला है। मुए भोंदू फूटी आंखों नहीं सुहाते!" इग्नात ने गहरी सांस लेकर कहा। "अच्छा, भले आदमी, अभी उठने का बखत नहीं हुआ, सो जाओ पूरी रफतार से..."

सुबह उसने टीकरे पिल्ले को अपने पास बुलाया और उसके कान उमेठे, फिर संटी से उसे सज़ा देने लगा, साथ में यह कहता जाता था:

"दरवाजे से जाया कर! दरवाजे से जाया कर!"